इससे प्रमाणित होता है कि ये १७वीं शताब्दी के लेखक थे। डॉ० हरीश का यह कथन है कि ये १७ वीं शताब्दी के प्रथम चरण के कवि थे[1] किन्तु इस रास में दिये रचनाकाल से वह अप्रमाणिक लगता है। डा० हरीश ने और कोई नवीन सूचना नहीं दी है।

भगवतीदास—अंबाला जिले के बूढ़िया नामक स्थान के निवासी श्री किसनदास अग्रवाल के पुत्र थे। भगवतीदास बूढ़िया से दिल्ली चले आये थे। आप काष्ठासंघ—माथुरगच्छीय भट्टारक गुणचंद्र> सकलचंद्र>महेन्द्रसेन के शिष्य थे। आपके समय दिल्ली में जहाँगीर का शासन था। आपकी उपलब्ध रचनायें प्रायः सं० १६८२ से लेकर सं० १७१५ के बीच लिखी गई हैं अर्थात् आप १७वीं शती के अंतिम और १८वीं के प्रथम चरण के कवि थे। इनकी २५ रचनायें प्राप्त हैं, जो दिल्ली, आगरा, हिसार आदि अनेक स्थानों पर लिखी गई हैं। ये रचनायें अध्यात्म और भक्तिभाव से पूर्ण हैं। इनकी भाषा सरल, सरस हिन्दी है। उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

सुगतिरमणीचूनड़ी—यह एक रूपक काव्य है। इसकी रचना सं० १६८० में बूढ़िया में ही हुई थी। इसमें ज्ञानरूपी जल एवं सम्यक्त्व रूपी रंग में रङ्गी अध्यात्मिक चूनड़ी का वर्णन किया गया है। इसमें कुल ३५ पद्य हैं। लगता है कि दिल्ली आने से पूर्व अपने पैतृक स्थान पर ही यह रचना कवि ने की थी।

लघु सीतासतु—सं० १६८४ में आपने वृहत्सीतासतु लिखा, फिर सं० १६८७ में उसे संक्षिप्त करके चौपाई बद्ध किया। इसमें कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

गुरु मुनि महिंद सैण भगौती, रिसिपद पंकज रेणु भगौती,
कृष्णदास बनि तनुज भगौती, कुरिय गह्यौ व्रतु मनुज भगौती।
नगर बूडिये वासि भगौती, जन्मभूमि चिरु आसि भगौती।
अग्रवाल कुल वंश लगि, पंडित पद निरखि भमि भगौती॥[2]

इसमें पिता, गुरु, वंश का परिचय वही है जो पहले लिखा गया है किन्तु निवास स्थान बूढ़िया की जगह चूड़िया कहा गया है। लगता

१. डा० हरीश—जैन गुर्जर कवियों की हिन्दी को देन पृ० ९८-१००
२. डॉ० कस्तूर चन्द कासलीवाल—राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची भाग ५ पृ० ३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org